Cambridge IGCSE

Cambridge Assessment International Education
Cambridge International General Certificate of Secondary Education

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **February/March 2019**

TRANSCRIPT

Approx. 35–45 minutes

This document consists of **9** printed pages and **1** blank page.

© UCLES 2019

Cambridge Assessment International Education

Cambridge Assessment International Education
Cambridge IGCSE
March 2019 Examination in Hindi as a Second Language
Paper 2 Listening Comprehension

Turn over now

[Pause 5 seconds]

FEMALE: अभ्यास 1: प्रश्न 1–6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * **संवाद 1**

FEMALE:

महिलाः हैलो! भाई साहब, कहीं बाहर गए थे क्या?

पुरुषः नहीं तो। हमारे यहाँ तो आजकल घर में थोड़ा काम चल रहा है।

महिलाः पता नहीं, आपका फ़ोन ही नहीं लग रहा था। मैंने पिछले हफ़्ते भी कोशिश की थी।

पुरुषः अरे नहीं, मीरा जी। मेरा फ़ोन तो राकेश के साथ चला गया था। वह अपने फ़ोन की जगह मेरा फ़ोन ले गया। दोनों फ़ोन एक ही जैसे हैं न!

महिलाः तब तो बड़ी दिक्क़त हुई होगी आपको! कैसे काम चलाया?

पुरुषः कुछ नहीं, बस राकेश के ही फ़ोन से काम चलाना पड़ा।

[Pause 10 seconds]

FEMALE: संवाद 2

MALE: देवियो और सज्जनो, दुनिया के ख़ूबसूरत आश्चर्य और विश्व की धरोहर, ताजमहल में आपका स्वागत है। ताजमहल के निर्माण और इतिहास की पूरी जानकारी भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के सूचना पटों पर लगी है। आप चाहें तो किसी प्रशिक्षित गाइड की सहायता भी ले सकते हैं। ताजमहल की दीवारों पर लिखना या कुछ भी उँकेरना मना है। कृपया लॉन से दूर रहें और ताज के परिसर में अपनी वेशभूषा की शालीनता बनाए रखें। धन्यवाद।

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 3**

FEMALE:

महिलाः भाई साहब, टर्मिनल एक को कौन सा रास्ता जाता है?

पुरुषः टर्मिनल एक का मोड़ तो आप पीछे छोड़ आई हैं। यह तो एक-तरफ़ा रास्ता है। अब आप ऐसा कीजिए, इसी लेन पर सीधे चलती जाइए। लगभग दो किलोमीटर के बाद एक लाल बत्ती आएगी। वहाँ से दाएँ मुड़ जाइए।

महिलाः वहाँ पूछना पड़ेगा या टर्मिनल एक के दिशा निर्देश लगे होंगे?

पुरुषः दिशा निर्देश तो लगे हैं लेकिन दाएँ मुड़िएगा। यू-टर्न मत लीजिएगा। वर्ना आप लौट कर यहीं पहुँच जाएँगी।

महिलाः जी, मैं ध्यान रखूँगी, धन्यवाद।

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 4**

FEMALE: अमेरिका और इंग्लैंड भले ही विकसित देश हैं, लेकिन वहाँ के लोग भी भारतीयों की प्रतिभा के कायल हैं। इसका उदाहरण इस साल केलीफ़ोर्निया के बर्कले विश्वविद्यालय में देखने को मिला। विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में एक भारतीय छात्र ने ऐसा रोमांचक भाषण दिया कि तालियों की गड़गड़ाहट थमने का नाम नहीं ले रही थी। चंडीगढ़ से वाणिज्य की पढ़ाई करने गए छात्र अंगद के भाषण का वीडियो सोशल मीडिया में लोकप्रिय हुआ। बर्कले विश्वविद्यालय ने अंगद को अपने सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित करने का फ़ैसला किया है।

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 5**

FEMALE:

महिलाः नमस्कार। सत्कार समूह की ओर से आपका स्वागत है। कहिए क्या सेवा करूँ!

पुरुषः जी, हमने एक कमरा बुक किया था। दो दिनों के लिए।

महिलाः किस नाम से बुक किया था? अपना नाम बताएँगे।

पुरुषः जी, मेरा नाम तो संजय साहू है। लेकिन कमरा शायद मेरी पत्नी प्रीति साहू के नाम से बुक है।

महिलाः आप अपना परिचय कार्ड दिखाएँगे संजय जी?

पुरुषः जी, परिचय कार्ड तो नहीं है। हम तो सैर-सपाटे के लिए आए हैं।

महिलाः कोई बात नहीं, इस फ़ॉर्म को भर दीजिए। धन्यवाद।

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 6**

FEMALE: प्राचीन काल से भारत लौह इस्पात उद्योग के लिए प्रसिद्ध रहा है। महरौली का यह लौह स्तंभ उसका एक ज्वलन्त उदाहरण है। इस लौह स्तंभ में लगे लोहे की मात्रा 98 प्रतिशत है और इसमें अभी तक ज़ंग नहीं लगा है। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इसे गुप्त वंश के सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय ने बनवाया था। कुछ अन्य के अनुसार इसका निर्माण सम्राट अशोक ने अपने दादा चंद्रगुप्त मौर्य की स्मृति में करवाया था। परन्तु विशेषज्ञों का मानना है कि इसका निर्माण इससे भी पहले हो चुका था। यह पहले किसी हिन्दू और जैन मंदिर का हिस्सा था। **

[Pause 10 seconds]

MALE: **अभ्यास 1 के इन संवादों को अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 10 seconds]

MALE: **यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 2: प्रश्न 7**

लोकप्रिय गायिका रेश्मा का इंटरव्यू लेकर लौटे पत्रकार राकेश चोपड़ा के साथ इंद्रधनुष की प्रस्तुतकर्ता गोपिका की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों को भरिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * गोपिकाः राकेश जी, हमारे श्रोताओं की ओर से आज की गपशप में आपका स्वागत है।

MALE:

राकेशः धन्यवाद, गोपिका जी।

गोपिकाः राकेश जी, ‘लंबी जुदाई’ और ‘लाल मेरी’ जैसे यादगार गानों की लोकप्रिय पाकिस्तानी गायिका रेश्मा जी के बारे में सुना है कि वे बहुत संकोची स्वभाव की कलाकार थीं। यह बताइए उनसे बातचीत का मौक़ा आपको कब और कैसे मिला?

राकेशः गोपिका जी, संकोची स्वभाव के बावजूद रेश्मा जी अपनी सादगी, स्पष्ट और सीधी बातचीत के लिए जानी जाती थीं। उनसे बातचीत का अवसर लाहौर में मिला। हुआ ये कि मैं पाकिस्तान के दौरे पर गई भारत की क्रिकेट टीम के साथ लाहौर गया था। अगले मैच का कार्यक्रम बदल जाने के कारण मुझे लाहौर हवाई अड्डे पर जाना पड़ा। वहाँ अचानक मेरी नज़र रेश्मा जी पर पड़ी जो कराची से लौट रही थीं। मौक़ा न गँवाते हुए मैंने उनसे इंटरव्यू की गुज़ारिश की और उन्होंने हाँ कर दी, तो बातचीत हो गई।

गोपिकाः लेकिन आप तो क्रिकेट टीम के साथ गए थे। तो क्या आपने रेश्मा जी से क्रिकेट पर भी कोई सवाल किया? क्या उन्हें क्रिकेट पसंद था?

© UCLES 2019

राकेशः जी हाँ, बातचीत की शुरुआत ही क्रिकेट से हुई थी। मैंने पूछा कि सचिन तेंदुलकर का खेल उन्हें कैसा लगता है? उनका जवाब चौंकाने वाला था। उन्होंने पूछा कौन सचिन तेंदुलकर? मैं तो बस इमरान ख़ान को जानती हूँ। अब मारिया शारापोवा ऐसी बात कहे तो समझ में आता है। लेकिन भारत में जन्मा कोई शख़्स यदि ऐसा कहे तो अचरज होता है।

गोपिकाः लेकिन यही शायद उनके सीधेपन और साफ़गोई का सबूत था। जो मन में था सो लाग-लपेट के बिना कह दिया। लेकिन आपने उन्हें भारत में जन्मा शख़्स कहा। क्या उनका जन्म भारत में हुआ था?

राकेशः जी हाँ। रेश्मा जी का जन्म आज़ादी के साल राजस्थान के चूरू ज़िले के लोहा नाम के गाँव में हुआ था। उनका जन्म बंजारे राजपूतों के परिवार में हुआ था। उनके पिता जी घोड़े और ऊँटों का व्यापार करते थे और तंबुओं में रहते थे जिनमें रात भर लोकगीतों का दौर चलता था। लेकिन विभाजन के बाद उनका परिवार कराची चला गया था। वे स्कूल भी नहीं जा सकीं और अक्सर दरगाहों पर गाती थीं। एक बार पाकिस्तान टीवी और रेडियो के प्रोड्यूसर सलीम गिलानी ने उन्हें शाहबाज़ कलंदर की दरगाह पर 'लाल मेरी' गाते हुए सुना। उन्होंने उसे रेडियो पाकिस्तान के लिए रिकॉर्ड करवाया जिसके बाद रेश्मा जी की लोकप्रियता बढ़ती चली गई।

गोपिकाः रेश्मा जी के गाने भारत में भी काफ़ी लोकप्रिय हुए। उन्हें भारतीय फ़िल्मों में लाने का श्रेय किसे जाता है?

राकेशः उनके गाने पर सबसे पहले राजकपूर जी की नज़र पड़ी थी। अपनी फ़िल्म बॉबी के लिए उन्होंने रेश्मा जी का गाया 'अँखियों को रहने दे' गाना चुना था लेकिन उन्होंने उसे लता जी से गवाया। उसके बाद सुभाष घई ने अपनी फ़िल्म हीरो के लिए उनसे एक गाना गवाया था, 'लंबी जुदाई'। इस गाने के लिए वे मुंबई आई थीं और दिलीप कुमार जी के घर रुकी थीं। यह गाना सुपरहिट हुआ और रेश्मा जी के नाम को अमर कर गया।

गोपिकाः आपने बताया कि सचिन तेंदुलकर के बारे में तो वे नहीं जानती थीं। लेकिन वैसे भारत के बारे में उनके क्या विचार थे?

राकेशः रेश्मा जी भारत को अपना दूसरा घर मानती थीं। वे भारत आईं तब चूरू में अपना घर देखने भी गईं। सुभाष घई ने एक इंटरव्यू में कहा था कि रेश्मा से ज़्यादा ईमानदार इंसान ढूँढ पाना मुश्किल है। उनमें किसी तरह की लगावट नहीं थी।

गोपिकाः राकेश जी, रेश्मा जी के बारे में इतनी दिलचस्प जानकारी देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

राकेशः धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 3: प्रश्न 8–15**

सुप्रसिद्ध शायर क़ैफ़ी आज़मी के बारे में उनकी बेटी और प्रख्यात अभिनेत्री शबाना आज़मी के संस्मरण को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।

यह संस्मरण आपको दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * वे कभी दूसरों जैसे थे ही नहीं, लेकिन बचपन में ये बात मेरे नन्हें से दिमाग में समाती नहीं थी। न तो वे ऑफिस जाते थे, न अंग्रेज़ी बोलते थे और न दूसरों के पापा की तरह पैंट और शर्ट पहनते थे, सिर्फ़ सफ़ेद कुर्ता-पायजामा पहनते थे। वे डैडी या पापा की बजाय अब्बा थे। यह नाम भी सबसे अलग ही था। मैं स्कूल में अपने दोस्तों से उनके बारे में बात करते हुए कतराती थी। झूठ-मूठ कह देती थी, वे कोई कारोबार करते हैं। वर्ना सोचिए, क्या यह कहती कि मेरे अब्बा शायर हैं? शायर होने का क्या मतलब? यही न कि कुछ काम नहीं करते!

बचपन में मुझे अपने माँ-बाप की बेटी होने की वजह से कुछ अनोखे तजुर्बे भी हुए। जैसे कि जिस अंग्रेज़ी स्कूल में मेरा दाख़िला कराया जा रहा था, वहाँ शर्त थी कि वही बच्चे दाख़िला पा सकते हैं जिनके माँ-बाप को अंग्रेज़ी आती हो। क्योंकि मेरे माँ-बाप अंग्रेज़ी नहीं जानते थे इसलिए मेरे दाख़िले के लिए मशहूर शायर सरदार जाफरी की बीवी सुल्ताना जाफरी को मेरी माँ बनना पड़ा और अब्बा के एक दोस्त मुनीश नारायण सक्सेना ने मेरे अब्बा की भूमिका की।

अब्बा को छुपाकर रखना ज़्यादा दिन मुमकिन न रहा। उन्होंने फ़िल्मों में गीत लिखने शुरू कर दिये थे और एक दिन मेरी एक दोस्त ने क्लास में आकर बताया कि उसने मेरे अब्बा का नाम अख़बार में पढ़ा है। बस, उस पल के बाद बाज़ी पलट गई। जहाँ शर्मिंदगी थी, वहाँ गौरव आ गया। चालीस बच्चे थे क्लास में मगर किसी और के डैडी या पापा का नहीं, मेरे अब्बा का नाम छपा था अख़बार में। अब मुझे उनका सबसे अलग तरह का होना भी अच्छा लगने लगा।

अब मैं उस काले रंग की गुड़िया से भी खेलने लगी जो उन्होंने मुझे लाकर कभी दी थी और समझाया था कि सारे रंगों की तरह काला रंग भी बहुत सुंदर होता है। मगर मुझे तो वैसी ही गुड़िया चाहिए थी, जैसी मेरी सारी दोस्तों के पास थी। सुनहरे बालों और नीली आँखों वाली। मगर अब जब कि मुझे सबसे अलग अब्बा अच्छे लगने लगे तो फिर उनकी दी हुई सबसे अलग गुड़िया भी अच्छी लगने लगी और जब मैं अपनी काली गुड़िया लेकर पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने दोस्तों के पास गई और उन्हें अपनी गुड़िया के गुण बताये तो उनकी सुनहरे बालों और नीली आंखों वाली गुड़िया उनके दिल से उतर गई। यह सबसे पहला सबक था जो अब्बा ने मुझे सिखाया, कि कामयाबी दूसरों की नकल करने में नहीं, आत्मविश्वास में है।

हमारे घर का माहौल बिल्कुल अलग था। मम्मी पृथ्वी थियेटर्स में काम करती थीं और अक्सर उन्हें दौरे पर जाना होता था। तो उन दिनों मेरे छोटे भाई, बाबा और मेरी सारी ज़िम्मेदारी अब्बा पर आ

© UCLES 2019

जाती थी। उनकी थियेटर में बहुत प्रशंसा होती थी और उन्हें भी अपने काम से बहुत प्यार था। मुझे याद है, महाराष्ट्र राज्य प्रतियोगिता के लिए वे एक नाटक 'पगली' की तैयारी कर रहीं थीं और अपने रोल में इतनी खोई रहती थीं कि वे पगली के संवादों के अंदाज़ में बोलने लगती थीं, कभी धोबी से हिसाब लेते हुए, कभी रसोई में खाना पकाते हुए।

मुझे लगा मेरी माँ सचमुच पागल हो गई हैं। मैं रोते हुए अब्बा के पास गई जो अपनी मेज़ पर बैठे कुछ लिख रहे थे। अपना काम छोड़कर वे मुझे समुंदर के किनारे ले गए। रेत पर चलते-चलते उन्होंने मुझे समझाया कि मम्मी को कितने कम वक़्त में कितने बड़े नाटक की तैयारी करनी पड़ रही है और हम सबका, परिवार के हर सदस्य का यह कर्तव्य है कि वो उनकी मदद करे, वर्ना वे इतनी बड़ी प्रतियोगिता में कैसे जीत पायेंगी! बस फिर क्या था। मैंने जैसे सारी ज़िम्मेदारी अपने सिर पर ले ली और जब मम्मी को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का अवॉर्ड मिला महाराष्ट्र सरकार से, तो मैं ऐसे इतरा रही थी जैसे अवॉर्ड मम्मी ने नहीं, मैंने जीता हो। **

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 3 का यह संस्मरण अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16–23

MALE: **इंदौर की पूर्व महापौर सुमित्रा जोशी के साथ पत्रकार विनय राय की बातचीत को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।**

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * विनयः सुमित्रा जी, स्वच्छता और पर्यावरण कार्यक्रम में आपका स्वागत है।
FEMALE:
सुमित्राः धन्यवाद विनय जी।

विनयः सुमित्रा जी, आपके शहर इंदौर ने आपके नेतृत्व में देश का सबसे स्वच्छ शहर होने का ख़िताब जीता था। यह बताइए कि चंडीगढ़, गाँधीनगर और नई दिल्ली जैसे खुले आधुनिक शहरों को पीछे छोड़कर इस ख़िताब को जीतने के लिए इंदौर ने क्या तरकीब अपनाई?

सुमित्राः विनय जी, 25 लाख की आबादी वाले मध्य प्रदेश के सबसे बड़े और पुराने शहर को देश के सबसे साफ़-सुथरे शहर में बदलना आसान काम तो नहीं था लेकिन मैं कहूँगी कि लोगों की लगन और संगीत के जादू ने इस काम को सुगम बनाया।

विनयः मैं कुछ समझा नहीं। संगीत का जादू सफ़ाई के काम कैसे आया सुमित्रा जी?

सुमित्राः यह बड़ा दिलचस्प किस्सा है विनय जी। शहर के गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग जगहों पर जमा करने के लिए हमने शहर में 350 से अधिक छोटी गाड़ियाँ चलाईं जो गली-मोहल्लों में लगातार चक्कर लगाती रहती थीं। लेकिन लोगों को इन गाड़ियों के आने की सूचना देना और इनकी तरफ़ आकर्षित करना एक बड़ी चुनौती थी। इसके लिए हमने आइसक्रीम बेचने वाली गाड़ियों की तर्ज़ पर कचरा उठाने वाली गाड़ियों पर भी गाने बजवाने का फ़ैसला किया। इन गाड़ियों पर लगे लाउडस्पीकरों पर कैलाश खेर का गाना - 'स्वच्छ भारत का इरादा कर लिया हमने' और शान का गाना - 'इंदौर को स्वच्छ बनाना है, अब हमने ये ठाना है' बजाया जाने लगा। ये दोनों गाने शहर को साफ़-सुथरा रखने वाले कचरा वाहनों के प्रतीक बनकर लोगों की ज़बान पर चढ़ गए। लोग इन गानों की आवाज़ सुनते ही अपने घरों और दुकानों में जमा कचरे को लेकर दौड़ पड़ते हैं और गाड़ियों में डाल देते हैं।

विनयः लेकिन भारत के शहरों में लोगों की अक्सर यह शिकायत होती है कि कूड़ा उठाने वाली गाड़ियाँ या तो पर्याप्त संख्या में होती नहीं या फिर वे कूड़ा उठाती नहीं हैं।

सुमित्राः इसी शिकायत का मौक़ा न देने के लिए हमने इंदौर में पर्याप्त संख्या में कूड़ा उठाने वाली गाड़ियाँ चलाईं जो सुबह से लेकर रात तक चलती रहती हैं और कूड़ा जमा करने के लिए बड़े कूड़ेदानों को हटा कर जगह-जगह पर हज़ारों छोटे-छोटे कूड़ेदान लगा दिए जिन्हें दिन में कई बार खाली किया जाता है। इससे कूड़ा सड़कों और गलियों में नहीं फैलता। इस कूड़े को अलग-अलग जगहों पर जमा किया जाता है जहाँ से बड़ी गाड़ियाँ उसे सीधे कचरागाहों तक ले जाती हैं।

विनयः क्या कोई ऐसी व्यवस्था भी की थी आपने जिससे कि कचरा पैदा ही कम हो?

सुमित्राः जी हाँ, हमने रसोई और बाग़ीचे से निकलने वाले गीले कचरे को दोबारा उपयोग में लाने की व्यवस्था की थी। इसके लिए लोगों को सूखा और गीला कचरा अलग-अलग रखने के लिए काले और हरे रंग के थैले और कूड़ेदान दिए गए। सूखा कचरा काले थैले या कूड़ेदान में डाला जाता है जबकि रसोई और बाग़ीचे से निकलने वाला गीला कचरा हरे थैले या कूड़ेदान में। गीले कचरे को सीधा खाद बनाने के लिए भेज दिया जाता है। बाकी सूखे कचरे को कचरागाहों में फेंक दिया जाता है। गीला कचरा दोबारा उपयोग में लाने से कचरे की कुल मात्रा घट गई।

विनयः प्लास्टिक के कचरे की समस्या को कैसे सुलझाया आपने?

सुमित्राः प्लास्टिक का कचरा गंदगी फैलाने के साथ-साथ शहर के नाले-नालियों को भी बंद कर देता है। इसकी वजह से नाले-नालियों में गंदा पानी भरा रहता है जिसमें मच्छर और मक्खियाँ पनपते हैं। इसे रोकने के लिए हमने प्लास्टिक के थैलों और पैकिंग के सामान की बिक्री पर रोक लगाई। कचरे से प्लास्टिक बीन कर उसके दोबारा उपयोग की व्यवस्था भी की गई। शुरू में तो इस काम में दिक्क़त आई, लेकिन जागरूकता आने के साथ-साथ लोगों का सहयोग मिलने लगा और काम आसान होता गया।

विनयः खुले में मल-मूत्र त्याग को रोकने के लिए क्या किया आपने?

सुमित्राः इंदौर के ग़रीब और झोपड़-पट्टी वाले इलाकों में खुले में मल-मूत्र की समस्या गंभीर थी। इसके लिए हमने साढ़े बारह हज़ार से अधिक घरों में शौचालय बनवाए। 175 सार्वजनिक शौचालयों की हालत दुरुस्त की और लगभग 20 चलित शौचालय भी बनवाए। इन सभी उपायों के अलावा खुली जगहों को छोटे-छोटे पार्कों और उद्यानों में बदलने का अभियान भी शुरू किया गया। निजी संस्थाओं और

स्कूलों को पार्कों और उद्यानों को गोद लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया। अपने-अपने इलाक़े की सफ़ाई और सुंदरता को लेकर लोगों में होड़ लगने लगी। इसी तरह की स्वस्थ स्पर्धाओं से इंदौर देश का सबसे साफ़-सुथरा शहर बना है जिस पर अब इंदौर वासियों को गर्व है।

विनयः सुमित्रा जोशी जी, इंदौर के सबसे साफ़-सुथरा शहर बनने की रोचक जानकारी देने के लिए आपका धन्यवाद।

सुमित्राः आपका भी धन्यवाद, विनय जी। **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 4 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।

This is the end of the examination.

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.